फ़िराक गोरखपुरी

कवि परिचय :– फ़िराक गोरखपुरी उर्दू, फारसी के जाने माने शायर हैं । आप का जन्म 28 अगस्त 1896 में गोरखपुर में हुआ था । आपका मूलनाम रघुपति सहाय 'फ़िराक' था । इन्होंने राम कृष्ण की कहानियों से अपनी शिक्षा की शुरूआत की । बाद में अरबी, फारसी और अंग्रेजी में शिक्षा ग्रहण की । 1917 ई० में आप डिप्टी कलेक्टर के पद पर नियुक्त हुए । 1918 ई० में स्वतन्त्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण नौकरी से त्याग पत्र दे दिया । 1920 ई० में स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के कारण वो जेल गए । ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विषय के अध्यापक भी रहे । आप को 'गुले–नग्मा' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ व सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार मिले । सन् 1983 ई० में इनका देहावसान हो गया ।

रूबाइयाँ

पाठ सार :– चाँद–सा बच्चा माँ की गोद में है, माँ उसे हवा में उछालती है । बच्चा खिलखिला कर हँस देता है । माँ बच्चे को नहलाती है, घुटनों में पकड़कर कपड़े पहनाती है और कंघी करती है । दीपावली के पर्व पर सुन्दर घर में और बच्चे के घरौंदे में दीपक जलाती है । आँगन में खड़ा बच्चा जिद कर रहा है, उसे चाँद खिलौना चाहिए । माँ बच्चे को दर्पण में चाँद दिखाती है । रक्षा बन्धन के त्यौहार पर बहन भाई की कलाई पर चमचमाती राखी पहनाती है ।

आँगन में लिए चांद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद–भरी
रह–रह के हवा मे जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी

शब्दार्थ :– चाँद का टुकड़ा = बहुत प्यारा, लोका देती है = उछाल देती है

व्याख्या :– माँ अपने प्यारे बच्चे को आँगन में गोद में ले कर खड़ी है । वह उसे अपने हाथों में झुला रही है बीच–बीच में वो उसे हवा में उछाल देती है । इस पर बच्चा खिलखिला कर हँसता है और उसकी हँसी चारों ओर गूँज जाती है ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. खड़ी बोली । उर्दू के शब्दों का सुन्दर प्रयोग
2. रूबाई छन्द
3. चाँद का टुकड़ा–मुहावरा
4. लोका देना–देशज शब्द
5. रह–रह–पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार
6. अन्तिम पंक्ति में श्रव्य बिंब ।

VASUNDHARAHINDI.COM

नहला के छलके–छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े

शब्दार्थ :– निर्मल = स्वच्छ, गेसु = बाल, घुटनियों = घुटनों, पिन्हाती = पहनाती

व्याख्या :– माँ बच्चे को स्वच्छ निर्मल जल से नहला कर उसके उलझे बालों में कंघी करती है। फिर माँ उसे अपने घुटनों में पकड़ कर कपड़े पहनाती है, तब बच्चा प्यार से अपनी माँ के मुख को देखता है ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली
2. रूबाई छन्द
3. वात्सल्य भाव प्रधान
4. दृश्य बिंब
5. छलके–छलके–पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार
6. घुटनियों, पिन्हाती देशज शब्द

दीवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिए

शब्दार्थ :– पुते = रंग किया हुआ, रूपवती = सुन्दर, मुखड़े = मुख, घरौदा = मिट्टी का घर

व्याख्या :– दीपावली की शाम है । घर लिपे पुते और सजे हुए हैं । घर में चीनी के खिलौने आये हैं । घर की सुन्दर स्त्री के मुख पर कोमलता व चमक है । वो घर में दिए जलाने के साथ–साथ बच्चे के मिट्टी के बने घर में भी दीपक जलाती है ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली
2. रूबाई छन्द
3. दृश्य बिंब

आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है

शब्दार्थ :– ठुनका = बनावटी रोना, ज़िदयाया = जिद कर रहा है, हई = है ही

VASUNDHARAHINDI.COM

व्याख्या :– बच्चा आँगन में नकली रो रहा है । वो जिद कर रहा है, क्योंकि आकाश का चाँद उसे खिलौने के रूप में चाहिए । माँ बच्चे को दर्पण में चाँद दिखाते हुए कहती है लो चाँद आ गया और बच्चे की जिद पूरी करती है ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली
2. रूबाई छन्द
3. ज़िदयाया, हई–देशज शब्द
5. दृश्य बिंब ।

रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली
छायी है घटा गगन की हलकी–हलकी
बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
भाई के है बाँधती चमकती राखी

शब्दार्थ :– रस की पुतली = मधुर बंधन, घटा = बादल, लच्छे = राखी के चमकदार लच्छे

व्याख्या :– रक्षा बंधन की मधुर सुबह है । आकाश में हल्के बादल छाये हैं । आकाश में बिजली चमक रही है । चमकती हुई बिजली की तरह चमकती हुई राखी बहन अपने भाई की कलाई में बाँध रही है ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली
2. रूबाई छन्द
3. हलकी–हलकी पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार

गज़ल

पाठ सार :– कवि का कहना है किस्मत ने कभी उसका साथ नहीं दिया है । उसने प्रेम की कीमत देते हुए अपने आप को प्रेम में भुला दिया है प्रेम में वियोग में वह चुप चाप आँसू बहाते हैं । इश्क वही पाता है जो अपना सब कुछ खो देता है तथा शराबी शराब पीते हुए अपनी प्रेमिका को याद करते है । अन्तिम शेर में फ़िराक गोरखपुरी कहते हैं कि उनकी गजलों में मीर की गजलों का प्रभाव नजर आता है ।

नौरस गुंचे पंखड़ियों की नाजुक गिरहें खोले हैं
या उड़ जाने को रंगो–बू गुलशन में पर तोले हैं ।

शब्दार्थ :– नौरस = नये रस, गुंचे = कली, नाजुक = कोमल, बू = खुशबू, गुलशन = बाग, पर तौलना = उड़ने के लिए तैयार होना

व्याख्या :– कवि कहते हैं नये रस से युक्त कलियाँ धीरे धीरे खिल रही हैं । ऐसा लग रहा है जैसे रंग और सुगंध रूपी पक्षी उड़ जाने के लिए अपने पंख तैयार कर रहा है, अर्थात् फूल के खिलते ही बाग में फूल व सुगंध और रंग का प्रभाव चारों तरफ नजर आने लगता है ।

VASUNDHARAHINDI.COM

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू शब्दों की प्रधानता जैसे गुंचे, नाज़ुक, गिरहें आदि
2. शेर छन्द
3. प्रसाद गुण
4. रंग व सुगंध का मानवीकरण किया गया है, इस लिए मानवीकरण अलंकार

तारे आँखे़ झपकावें हैं ज़र्रा–ज़र्रा सोये हैं
तुम भी सुनो हो यारो ! शब में सन्नाटे कुछ बोले हैं ।

शब्दार्थ :– झपकाना = आँखो का खोलना–बंद करना, ज़र्रा–ज़र्रा = कण–कण, शब = रात, सन्नाटे = शान्ति ।

व्याख्या :– रात के समय आकाश में टिमटिमाते हुए तारे ऐसे लग रहे है जैसे उन्हें नींद आ रही है, इस लिए आँखें झपका रहे हैं । प्रकृति का कण–कण सो रहा हैं, ऐसे में ऐसा लग रहा है जैसे सन्नाटा कुछ बोल रहा है, इसे सुनो ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू प्रधान खड़ी बोली ज़र्रा–ज़र्रा, शब, सन्नाटा उर्दू के शब्द
2. शेर छन्द
3. ज़र्रा–ज़र्रा – पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार
4. तारों व सन्नाटे का मानवीकरण किया गया है इस लिए मानवीकरण अलंकार

हम हों या किस्मत हो हमारी दोनों को इक की काम मिला
किस्मत हमको रो लेवे हे हम किस्मत को रो ले हैं ।

शब्दार्थ :– इक = एक

व्याख्या :– कवि कहते हैं मुझे व मेरी किस्मत को एक ही काम है । किस्मत मुझे कोसती है कि कैसा व्यक्ति है ? कर्म कर के मुझे बदल क्यों नहीं लेता । तथा मैं किस्मत को कोसता हूँ कि कैसी किस्मत है जो मेरा भाग्य नहीं बदलती ?

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू प्रधान खड़ी बोली किस्मत उर्दू का शब्द
2. शेर छन्द
3. किस्मत का मानवीकरण किया गया है मानवीकरण अलंकार

जो मुझको बदनाम करे हैं काश वे इतना सोच सकें
मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले हैं ।

शब्दार्थ :– परदा = राज (रहस्य)

व्याख्या :– कवि कहते हैं जो लोग मेरे रहस्य दूसरों को बताते हैं, वास्तव में अपनी कमियाँ लोगों को बता रहे हैं कि वास्तव में यह व्यक्ति विश्वास के योग्य नहीं है । यह किसी के रहस्य अपने तक नहीं रख सकता ।

VASUNDHARAHINDI.COM

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू प्रधान खड़ी बोली बदनाम, काश, परदा आदि उर्दू के शब्द ।
2. शेर छन्द
3. दूसरों को बदनाम करने वाले लोगों पर व्यंग्य किया गया है ।

ये कीमत भी अदा करे हैं हम बदुरूस्ती–ए–होशो–हवास
तेरा सौदा करने वाले दीवाना भी हो ले है ।

शब्दार्थ :– कीमत = मूल्य, अदा = चुकाना, बदुरस्ती–ए–होशो–हवाश = पूरे विवेक के साथ, सौदा = मूल्य (प्रेम का मूल्य)

व्याख्या :– कवि कहते हैं हम पूरे विवेक के साथ सोच समझ कर कहते है कि हम प्रेम का ये मूल्य भी चुकायेंगे क्योंकि प्रेम करने वाले प्रेम के मूल्य के रूप में प्रेम दिवाने जो जाते हैं ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली कीमत, अदा, बदुरूस्ती–ए–होशो–हवास, सौदा, दीवाना आदि उर्दू के शब्द
2. शेर छन्द
3. कीमत अदा करना मुहावरा है

तेरे गम का पासे–अदब है कुछ दुनिया का खयाल भी है
सबसे छिपा के दर्द के मारे चुपके–चुपके रो ले हैं ।

शब्दार्थ :– गम = दुख, पासे–अदब = लिहाज, खयाल = ध्यान

व्याख्या :– प्रेमी प्रेमिका से कहता है मै तुम्हारे दुख का सम्मान करता हूं, परन्तु मुझे संसार का भी ध्यान करना है । अगर मैं तुम्हारे दुख को सब से कहूँगा तो तुम्हारी बदनामी होगी । इसलिए तुम्हारे दुख से दुखी हो कर मै सब से छिप कर चुपचाप रो लेता हूँ ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली गम, पासे, अदब, दुनिया ख्याल, दर्द आदि उर्दू के शब्द
2. शेर छन्द
3. वियोग श्रृंगार रस

फ़ितरत पर कायम है तवाजुन आलमे–हुस्नो–इश्क में भी
उसको उतना ही पाते हैं खुद को जितना खो ले हैं

शब्दार्थ :– फ़ितरत = स्वभाव, तवाजुन = संतुलन, आलमे = संसार, हुस्नो इश्क = प्रेम व सौन्दर्य, खुद = स्वयं

व्याख्या :– हुस्न व सौन्दर्य के संसार में संतुलन कायम तभी होता है जब प्रेम करने वाला अपने को समर्पित करता है अर्थात् प्रेम में जितना अधिक समर्पण का भाव होता है उतना प्रेम प्राप्त होता हैं ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली फ़ितरत, कायम, तवाजुन, आलमे–हुस्नो–इश्क, खुद आदि उर्दू के शब्द
2. शेर छन्द
3. खोना व पाना विरोधाभास अलंकार

आबो ताब अश्आर न पूछो तुम भी आँखें रक्खो हो
ये जगमग बैतों की दमक है या हम मोती रोले हैं

शब्दार्थ :– आबो–ताब–अश्आर = चमक–दमक के साथ, बैत = शेर

व्याख्या :– मेरी शायरी में जो इतनी चमक–दमक है उसके विषय में मुझ से न पूछो । तुम भी आँखें रखते हो । मेरे शेरों की चमक–दमक को पाने के लिए मैंने आँसू बहाये है अर्थात् अपने दर्द को शब्दों का रूप दिया है ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली आबो–ताब, अश्आर, बेत, दमके आदि उर्दू के शब्द
2. शेर छन्द
3. वियोग श्रृंगार रस
4. आँखें रखना मुहावरा

ऐसे में तू याद आए है अंजुमने–मय में रिंदों को
रात गए गर्दूं पै फ़रिश्ते बाबे –गुनह जग खोले हैं ।

शब्दार्थ :– अंजुमने–मय = शराब की महफिल, रिंदों = शराबी, गर्दूं = आकाश, फरिश्ते = देवदूत, बाबे गुनह = पाप के अध्याय, जग = संसार

व्याख्या :– कवि कहते हैं एक प्रेमी को अपनी प्रेमिका तब भी याद आती है, जब शराब की महफिल में शराबी बैठे होते हैं, तथा आकाश में बैठे देवदूत लोगों के पाप के अध्याय खोल रहे होते हैं ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली । अंजुमने, मय, रिंदों, गर्दू, फरिश्ते, बाबे, गुनह, जग आदि उर्दू के शब्द
2. शेर छन्द
3. वियोग श्रृंगार रस

सदके फ़िराक एज़ाज़े सुखन के कैसे उड़ा ली ये आवाज़
इन गज़लों के परदों में तो 'मीर' की गज़लें बोले हैं ।

शब्दार्थ :– सदके = कुर्बान (मुग्ध), एज़ाज़े सुखन = बेहतर काव्य, परदों = चरण

व्याख्या :– लोग कहते है फ़िराक तुम्हारे बेहतर काव्य पर हम मुग्ध हैं क्योंकि तुम्हारा काव्य हमें मीर के काव्य की तरह श्रेष्ट लगता है ।

VASUNDHARAHINDI.COM

भाषा सौन्दर्य :–

1. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली सदके, फ़िराक, एज़ाज़े सुखन, आवाज़, परदों आदि उर्दू के शब्द
2. शेर छन्द
3. आवाज़ उड़ाना – मुहावरा

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है ?
उत्तर :– राखी का त्यौहार सावन के महीने में आता है । उस समय आकाश में बादल होते हैं तथा बादलों में बिजली चमकती है । राखी के लच्छे भी बिजली की तरह चमकते हैं । जैसे बादलों व बिजली का गहरा सम्बन्ध है, वैसे ही भाई–बहन में भी गहरा सम्बन्ध है ।

प्रश्न 2. खुद का परदा खोलने से क्या आशय है ?
उत्तर :– कवि का कहना है जो लोग दूसरों की कमियाँ गिनवाते हैं तथा दूसरों की निंदा करते हैं, वास्तव में अपनी कमियाँ व्यक्त करते हैं, क्योंकि दूसरों की बुराई करने वाला अपनी बुराई से परदा उठाता है कि वह विश्वास के योग्य नहीं है ।

प्रश्न 3. किस्मत हमको रो ले है हम किस्मत को रो ले हैं–इस पंक्ति में शायर की किस्मत के साथ तना–तनी का रिश्ता अभिव्यक्त हुआ है । चर्चा कीजिए ।
उत्तर :– किस्मत व शायर में तना–तनी है क्योंकि शायर सोचता है वो कैसा बदकिस्मत हैं कि किस्मत उसका साथ ही नहीं देती और किस्मत को यह लगता है कि कैसा व्यक्ति है कि कर्म करके अपनी किस्मत नहीं बदल सकता ।

प्रश्न 4. गोदी के चाँद व गगन के चाँद का क्या रिश्ता है ?
उत्तर :– माँ की गोद में उसका चाँद सा पुत्र है तथा आकाश में चाँद निकला है । हम ये भी कह सकते हैं माँ की गोद में घर को आलोक देने वाला चाँद है इसी लिए इन दोनों का भी गहरा नाता है ।

प्रश्न 5. 'सावन की घटाएँ व रक्षा बंधन का पर्व ।' आशय स्पष्ट कीजिए ।
उत्तर :– सावन के महीने में जब आकाश में घटाएँ छाई रहती हैं तब रक्षा बंधन का त्यौहार आता है । ठीक उसी प्रकार इस अवसर पर भाई बहन के हृदय मे प्रेम की घटाएँ छाई रहती हैं ।

प्रश्न 6. फ़िराक की गज़ल मे प्रकृति को किस तरह चित्रित किया गया है ?
उत्तर :– शायर का कहना है कलियाँ धीरे–धीरे खिल रही हैं । ऐसे लग रहा है जैसे सुगन्ध व रंग रूपी पक्षी उड़ने को तैयार है । रात को तारे शायर को ऐसे लग रहे हैं जैसे नींद के कारण आँखें झपका रहे हैं तथा जब रात्री मे कण–कण सो रहा होता है ऐसे लगता है जैसे सन्नाटे कुछ बोल रहे है ।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 7. 'रूबाइयाँ' के आधार पर घर–आँगन में दीवाली और राखी के दृश्य–बिंब को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए ।

अथवा

फ़िराक की रूबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिम्बो का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर :– दीवाली की शाम है । घर–आँगन साफ–सुथरा और सजा–सँवरा है । घर की सुन्दर स्त्री घर में दीपक जलाते समय बच्चे के घरौंदे में भी दिया जलाती है ।

राखी का दिन है । आकाश में बादल छाये हैं व बिजली चमक रही हैं। बिजली की चमक के समान चमकते हुए राखी के लच्छे बहन अपने भाई के हाथ पर बांधती है।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM